ISSN:2583-8849



अतिथि संपादक की कलम से.....

राजस्थान का साहित्य: अतीत की धरोहर से भविष्य की उड़ान तक-

बबिता कुमावत

साहित्य किसी भी समाज की चेतना, उसकी संवेदनाओं और उसकी ऐतिहासिक यात्रा का सच्चा दर्पण होता है। जब हम राजस्थान के साहित्य और यहाँ की साहित्यिक परंपरा की बात करते हैं, तो हमारे समक्ष केवल किसी एक भाषा या सीमाओं में बंधे शब्द नहीं उभरते, बल्कि थार के धोरों की तपन, अरावली का स्वाभिमान, संतों की अमर वाणी और यहाँ के युवा साहित्यकारों विशेषकर हमारी प्रखर महिला कलमकारों के हिवड़े की तड़प और संवेदना मुखरित हो उठती है।

हाल के दिनों में मुझे विभिन्न ऑनलाइन काव्य गोष्ठियों एवं प्रत्यक्ष साहित्यिक मंचों के माध्यम से राजस्थान के वर्तमान एवं युवा कलमकारों से जुड़ने और संवाद करने का सुंदर अवसर प्राप्त हुआ। ऑनलाइन आयोजनों में दूर -दराज़ से जुड़े साहित्यकारों की पाठ-शैली और प्रत्यक्ष मुलाकातों के दौरान हुई गहन साहित्यिक चर्चाओं ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। उसी समय मेरे मस्तिष्क में यह विचार कौंधा कि राजस्थान की माटी से उपजे इस समृद्ध साहित्य और यहाँ की नई पीढ़ी के ऊर्जावान साहित्यकारों के अवदान पर मुझे विस्तार से लिखना चाहिए। जब मैंने इस विषय पर 'साहित्य रत्न' पत्रिका के संपादक सुरजीत सिंह जी से विचार-विमर्श किया, तो उन्होंने न केवल मेरे विचार का आत्मीयता से स्वागत किया, बल्कि मुझे इस प्रतिष्ठित पत्रिका के 'अक्टूबर विशेषांक' में अतिथि संपादक के रूप में दायित्व सौंपने का सौभाग्य भी प्रदान किया। इसके लिए मैं सुरजीत सिंह जी की सहृदयता से आभारी हूँ। आज राजस्थान के साहित्यिक परिदृश्य की सबसे सुंदर और समृद्ध बात यह है कि यहाँ की माटी से जुड़े रचनाकार केवल क्षेत्रीय भाषा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राजस्थान मूल के अनेक ऐसे प्रतिभाशाली युवा साहित्यकार हैं जो हिंदी भाषा में उत्कृष्ट, प्रासंगिक और गंभीर लेखन कर देश भर में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं। राजस्थानी और हिंदी दोनों ही धाराओं के ये युवा साहित्यकार प्रतिष्ठित पत्रिकाओं, ई-मंचों और शोध-पत्रों में अपनी विचारशील व बेबाक लेखनी से राष्ट्रीय पटल पर राजस्थान की प्रखर उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। विशेष रूप से हमारी समकालीन महिला साहित्यकारों की उपस्थिति ने इस पूरे परिदृश्य को एक नई दृष्टि, संवेदनशीलता और निडरता प्रदान की है।

हिंदी भाषा में लिख रहे राजस्थान मूल के प्रमुख युवा साहित्यकारों की बात करें तो कवियों ने अपनी 'हिंदी कविताओं को वैश्विक युवाओं के दिलों तक पहुँचाया है। वहीं, युवा कथाकार अपनी हिंदी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से राजस्थान के कस्बाई जीवन, बदलते ग्रामीण ढाँचे और युवाओं की आर्थिक-सामाजिक छटपटाहट को पत्रिकाओं में प्रमुखता से उठाते हैं। राजस्थान मूल की हिंदी कवयित्री भी अपने हिंदी काव्यों के माध्यम से महानगरीय जीवन में पिसती स्त्री की मानसिक स्थिति, उसकी स्वतंत्रता और पारिवारिक विषमताओं के मुद्दों को बेबाकी से रेखांकित करती हैं। जिस तरह से युवा लेखक और कवि जितेंद्र कुमार सोनी जी हिंदी में अपने चर्चित कविता संग्रह 'यादें: एक सफर' और प्रशासनिक अनुभवों से उपजी हिंदी रचनाओं के ज़रिए थार के कठिन जीवन, मरुस्थलीय पारिस्थितिकी और आम जन की जीजीविषा को राष्ट्रीय फलक पर लाते हैं।

वहीं, राजस्थान के युवा शोधकर्ता और लेखक देवीलाल महिया जी प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिकाओं में अपने शोधपरक हिंदी आलेखों के माध्यम से अरावली पहाड़ियों के संरक्षण, थार में गहराते पर्यावरण संकट और युवा अस्मिता जैसे ज्वलंत विषयों पर निरंतर लिख रहे हैं। इसके साथ ही, राजस्थानी भाषा में भी किरण बादल जी अपनी काव्य कृति 'आभै रो आंगण' से पर्यावरण संकट और मोनिका गौड़ जी अपनी कथा-कृति 'चाँदणी रो सरग' से स्त्री-विमर्श के ज्वलंत मुद्दों को उठा रही हैं।

चाहे हिंदी भाषा का व्यापक वैचारिक विस्तार हो या राजस्थानी भाषा की आत्मीय मिठास, राजस्थान के ये महिला साहित्यकार और युवा कलमकार केवल पुरानी परिपाटियों को दोहरा नहीं रहे हैं। वे अपनी हिंदी और राजस्थानी रचनाओं के माध्यम से दहेज प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, पितृसत्तात्मक विषमता और घरेलू हिंसा जैसी सामाजिक कुरीतियों पर करारा प्रहार कर रहे हैं। इसके साथ ही अरावली का अवैध खनन, थार का बदलता पर्यावरण, बिखरती ग्राम्य चेतना, जल संकट और महानगरीय जीवन की विसंगतियों जैसे ज्वलंत विषयों पर उनकी लेखनी निरंतर गतिमान है। डिजिटल युग में ई-पुस्तकों, पोडकास्ट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन साहित्यिक मंचों का प्रयोग करके ये साहित्यकार राजस्थान की माटी की संवेदना और ज्वलंत प्रश्नों को सात समुंदर पार तक पहुँचा रहे हैं। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि राजस्थान की नई पीढ़ी केवल अतीत का महिमामंडन नहीं कर रही, बल्कि भाषा की सीमाओं से ऊपर उठकर वर्तमान के सबसे कठिन प्रश्नों से सीधे टकराते हुए सामाजिक बदलाव की सच्ची संवाहक बन चुकी है।

'साहित्य रत्न' के इस 'अक्टूबर विशेषांक' के माध्यम से मेरी सभी लेखकों, शोधार्थियों और पाठकों से यही अपील है कि हम राजस्थान के इन सभी युवा व महिला साहित्यकारों के अभूतपूर्व योगदान को समझें और उनकी कृतियों से आत्मीय रूप से जुड़ें। आइए, अपनी गौरवशाली विरासत पर गर्व करते हुए और राजस्थान के इन समस्त कलमकारों के विचारों को संबल देते हुए, इस साहित्य को भविष्य की एक नई और बुलंद उड़ान प्रदान करें।